an>

Title: Need to include and develop places of historical and tourist importance in Chatra Parliamentary Constituency, Jharkhand under SWADESH DARSHAN and PRASAD Scheme.

श्री सुनील कुमार सिंह (चतरा) ः भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने देश में पर्यटन अवसंरचना के विकास हेतु कई महत्वपूर्ण कदम उठायें हैं। वर्ष 2014-15 में दो नई योजनाएं लागू की गई। प्रथम स्वदेश दर्शन- थीम आधारित पर्यटक परिपथों का एकीकृत विकास करना और दूसरी प्रसाद- तीर्थ स्थल जीर्णोद्धार एवं आध्यात्मिक संवर्धन अभियान। प्रथम स्वदेश दर्शन योजना के तहत विकास हेतु तेरह थीम आधारित परिपथों की पहचान की गई हैं। परन्तु इन परिपथों में एक भी झारखण्ड राज्य का कोई भी स्थल पर्यटक विकास के लिए शामिल नहीं किया गया है। जबकि झारखंड राज्य को प्रकृति ने अप्रितम सौंदर्य और असीमित पर्यटन स्थलों से नवाजा है। सदियों से प्राकृतिक खूबसूरत झरने, नदी, पहाड़, पठार और वन्य प्रदेश शामिल हैं। कई मानव निर्मित उद्यान, मंदिर और प्राचीन कला स्थल आदि हैं। झारखंड क्षेत्र विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं धर्मों का संगम क्षेत्र है। यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य व संस्कृति देश-विदेश के सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जंगल, पहाड़, घाटी, झरने, वन्य प्राणी, इतिहास, सभ्यता-संस्कृति में धनी झारखण्ड धरती पर स्वर्ग के एक हिस्से के रूप में खड़ा है। भारत सरकार के अतुल्य भारत (इंक्रेडिबल इंडिया) के सहयोग से इण्डिया टुडे टूरिज्म अवार्ड फरवरी, 2017 में वन्य जीव अध्याय में झारखण्ड के बेतला वन का उल्लेख है। जिसमें साल और बांस का जंगल है एवं यह वनस्पतियों और जीवों की विविधता के लिए मशहूर हैं। राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा पा चुका यह जंगल बाघ, चीते, हाथियों और इंडियन गौर समेत कई पशुओं का घर है। बेतना नेशनल पार्क (पलामू टाईगर रिजर्व), लावालॉग वाइल्डलाइफ सेंचुरी एवं माहुदानर वॉल्फ सेंचुरी आदि को स्वदेश दर्शन की वन्यजीव परिपथ या जनजातीय परिपथ में शामिल किया जाये।

झारखण्ड के चतरा जिला अंतर्गत ईटखोरी शैव, शात, वैष्णव, जैन एवं बुद्ध मतावलंबियों को समाहित करता धार्मिक विविधता एवं सहिष्णुता के साथ-साथ सांस्कृतिक एकता का दिग्दर्शन कराता है। इसमें संस्कृति, विरासत, आध्यात्मिकता और ईको-पर्यटन का विवेकपूर्ण मिश्रण है। इंडिया टुडे के अंक (8 फरवरी, 2017) में झारखण्ड के पारसनाथ मंदिर, गिरिडीह, (झारखण्ड की सबसे ऊँची पहाड़ी पर 4480 फुट पर स्थित पारसनाथ मंदिर को जैनियों के सबसे पवित्र स्थलों में एक दर्जा हासिल हैं) का जिक्र विरासत स्थल में किया गया है। अतः ईटखोरी, भद्रकाली मंदिर, कौलेश्वरी मंदिर, भवानी मठ चतरा, नगर भवानी प्राचीन मंदिर, चदंवा, लातेहार, श्रीकेदाल मंदिर व झारखंडी मंदिर, पारसनाथ मंदिर आदि मंदिरों को एक परिपथ में जोड़कर विकसित किया जाये। राजा मेदनी राय द्वारा निर्मित पलामू किला एवं नावागढ़ किला प्राचीन धरोहर है। अतः इन मंदिरों एवं किलों को स्वदेश दर्शन की जैन, बौद्ध परिपथ/ आध्यात्मिक परिपथ/ विरासत परिपथ/ईको परिपथ या ग्रामीण परिपथ में से किसी में सम्मिलित कर विकसित किया जाये।

चतरा संसदीय क्षेत्र के तमासीन एवं लोध जल प्रपात, कमलदह झील सहित विभिन्न जल प्रपात एवं अन्य मनोहर घाटियां, ईटखोरी और कौलेश्वरी पहाड़ियां आदि के लिए पर्यावरण आधारित पर्यटन विकसित करना चाहिए। नेतरहाट को पर्वतीय पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में पर्यटन विकसित होने से पर्यटकों का आवागमन बढ़ेगा। स्वदेश दर्शन के पर्वतीय परिपथ/जनजातीय परिपथ/ईको परिपथ या ग्रामीण परिपथ में से किसी एक में सम्मिलित कर विकसित किया जाये।

प्रसाद योजना के अंतर्गत धार्मिक महत्व के स्थलों के विकास के लिए झारखण्ड राज्य से एकमात्र स्थान देवघर का चयन किया गया है। जबकि झारखण्ड में कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं जिनका विकास किया जाना आवश्यक है। केंद्र सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2014-15 एवं वर्ष 2016-17 के लिए झारखंड को पर्यटन विकास हेतु कोई राशि स्वीकृत नहीं की गई है। अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि झारखण्ड के चतरा जिलान्तर्गत ईटखोरी प्रखण्ड स्थित ""माँ भद्रकाली " मंदिर एवं हण्टरगंज प्रखण्ड स्थित "कौलेश्वरी " मंदिर, चतरा का भवानी मठ, नगर भवानी प्राचीन मंदिर, चदंवा नगर मंदिर, लातेहार, श्रीकेदाल मंदिर व झारखंडी मंदिर आदि प्राचीन एवं धार्मिक महत्व के मंदिरों के विकास के लिए प्रसाद योजना में शामिल कर राशि आवंटित की जाये।